धर्म जीवन

जनवरी 2006

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के 155 वें वार्षिक शुभ जन्म महोत्सव की रिपोर्ट।

माता – पिता सन्तान यज्ञ

1. सन्तान यज्ञ साधन कर्ता माता – पिता के लिए यह जानना और अनुभव करना कि उनकी सन्तान उनके अस्तित्व का अंश होने से उनके उत्कृष्ट आकारों और गुण की थोड़ी वा बहुत अवश्य भागी बनती है।

2. यह आवश्यक है कि वह अपनी सन्तान को अपने अस्तित्वों का अंश जानकर उनके साथ उचित सम्बन्ध अनुभव करें।

3. वह अपनी सन्तान के सम्बन्ध में अपने आप को प्रत्येक नीच गति से मुक्त करने और रखने और प्रत्येक उच्च गति दायक भाव के द्वारा उसके साथ सम्बन्ध उत्पन्न वा उन्नत करने की आवश्यकता को भली भांत अनुभव करें।

4. वह मोह रहित रहकर अपनी प्रत्येक सन्तान के प्रति उचित रूप से अपना स्नेह प्रदर्शन करें।

5. वह अपनी कन्याओं को अपने पुत्रों की न्याई समरूप से अर्थात बिना किसी अनुचित पक्षपात के पालन करें।

6. वह अपनी योग्यता के अनुसार अपनी सन्तान का युवा अवस्था तक भली भांत पालन करें, और यथा सम्भव अपनी किसी विकलांग और अहसाय सन्तान के निमित्त सारी आयु के लिए रक्षा और पालन का प्रबन्ध करें।

7. वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपनी प्रत्येक सन्तान की आवश्यकता और अवस्था के अनुकूल उसकी मान्सिक शक्तियों की उन्तति के लिए उसे विविध प्रकार की भाषाओं और साधारण ज्ञान और विज्ञान आदि की शिक्षा दें।

8. वह अपनी प्रत्येक सन्तान को आत्मा की गठन और उसकी विनाश और विकासकारी गतियों के सम्बन्ध में सब प्रकार की आवश्यक शिक्षा दें।

9. वह अपनी सन्तान को सत्य धर्म और उसके लक्षणों और साधनों आदि के विषय में उचित रूप से शिक्षा दें।

10. वह अपनी प्रत्येक सन्तान में नाना सात्विक और उच्च भावों में विकसित करने के लिए उचित रूप से चेष्टा करें।

11. वह अपनी प्रत्येक सन्तान में उसकी नीच गतियों के प्रति घृणा व विराग भाव के उत्पन्न और वर्धन करने के लिए उचित रूप से चेष्टा करें।

12. वह अपने उपार्जित धन वा अपनी उपार्जित सम्पत्ति में से अपनी किसी सन्तान को जो कुछ देना चाहे उसे केवल उतनी मात्रा में दान करें, कि जितनी मात्रा में दान करना उसकी किसी विशेष आवश्यकता के विचार से उसके लिए उचित और हितकर हो।

13. वह जहां तक सम्भव हो अपने स्नेह और नैतिक बल के द्वारा अपनी सन्तान का शासन करें। और जब तक वह अपनी किसी सन्तान को उसके किसी अपराध व उसकी अवज्ञा के लिए कोई दण्ड देना उचित समझें, तब उसके हित और अपने अधिकार की सीमा और उसकी आयु और अवस्था आदि का विचार करके दें।

14. वह अपनी सन्तान के सम्बन्ध में अपनी किसी अनुचित क्रिया के विषय में बोध लाभ करने पर उसके लिए उचित परिशोध करके उसके साथ अपने सम्बन्ध को पवित्र करें।

15. वह योग्यता रखने पर अपनी प्रत्येक सन्तान के लिए मंगल कामना का उचित रूप से साधन करें।

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 1
जनवरी 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 155वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 155वां शुभ जन्म महोत्सव 14 दिसम्बर से 17 दिसम्बर तक श्रीमती शुभवती धर्मशाला, सैक्टर 18 डी, चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षों की तरह पूरे चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैयारियां की गईं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने साथियों के साथ सब स्थानों का दौरा किया और सेवकों और श्रद्धावानों को महोत्सव पर पहुंचने के लिए प्रेरणा दी। इस अभिप्राय के लिए बहुत से पत्र लिखे गए। हित स्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गए। इनके द्वारा भी महोत्सव का शुभ संवाद पहुंचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमंत्रण पत्र छापे गए और अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए इस साल पंडाल पहले की तरह से बनाया गया। उसके लिए तरपाल डाली गई। पण्डाल को अंदर से बर्फ जैसी सफेद चादरों से ऊपर नीचे खूब सजाया गया। बिजली के सुन्दर फानूसनुमा शैण्डलियर लटकाए गए। गुरु महाराज का बड़े साईज़ का फोटो और माटोज़ सजाए गए। उच्च आत्माओं की फोटोज़ पण्डाल के दोनों तरफ सजाई गईं। हाल को जगदीश जी, मोनाजी, रश्मि जी तथा अन्य अध्यापिकाओं ने मिल कर सजाया। इससे हाल की शोभा और भी बढ़ गई। पौधों, गमलों, बांसों पर झण्ड़े, बड़े विजय पताका आदि ने सारे आंगन को सजा दिया। हमेशा की तरह पराली का अच्छा प्रबंध किया गया और कमरों में बिछाई की गई। बैंड आदि का प्रबंध किया गया। धर्मशाला प्रबंध ने सारी सफेदी आदि करवा दी। लंगर और कैंटीन का बहुत अच्छा प्रबंध किया गया। श्रीमान जगदीश जी, सुखदेव जी, दत्ता जी, मधुसूदन जी आदि ने सब तैयारियों में बहुत संग्राम किया और बहुत श्रद्धापूर्वक सेवा की। जगदीश जी कई दिन इन सेवा के कामों में भाग भाग कर सेवाकारी होते रहे और उन्होंने खुशी खुशी यह संग्राम किया। इस पावन अवसर पर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, यू. पी., बिहार, दिल्ली आदि स्थानों से यात्री पहुंचे। कल्याण, कच्छ भुज (गुजरात), जंडवाला गोनियाना मंडी, भुच्चो

मंडी, थराजवाला, गुरूहरसहाए, केसुपुरा, मल्लेका, दड़बी, बनी, गुरूसर ढाणी (भौजदीन), यमुनानगर, मलवानी, धर्मशाला, पदमपुर, गजसिंह पुर, लालबाई, समराला, संगरूर, राएपुर रानी, अम्बाला, खतौली, मेरठ, मोगा, रायपुर खुर्द, डबवाली, फीरोज़पुर, कसौली, मोहाली, सोनीपत, लुधियाना इत्यादी स्थानों से यहां पर 175 के करीब कुल यात्री आकर शामिल हुए। इसके इलावा सैंकड़ों जन लोकल भी शामिल होते रहे।

14.12.05 प्रवेश सभा समयः **शाम 5.00 बजे**
सभापतिः **श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,**

भजन : श्रीमान जगदीश जी ने हमारे पूजनीय सतगुरू जी तुम हो धन्य वाले भजन के साथ गुरु महाराज के 155 वें शुभ जन्म महोत्सव का शुभ आरम्भ किया।

उस भजन के बाद परम्पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन करके देवस्तोत्र का समूह गान किया गया। सभापति जी ने व्याख्या की और हाज़रीन का स्वागत किया। फिर श्रीमान दत्ता जी ने महिमा वर्णन में न आने वाले भजन का बहुत सुन्दर गान किया। फिर देवप्रभावों की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई। सभापति जी ने ब्यान शुरू करते हुए फरमाया कि आज सुबह ही टी. वी. पर देखा कि चन्द दिन हुए एक जन ने अपनी एक या सवा माह की बच्ची को जमीन पर पटक कर मार दिया। घर वालों को उस बच्ची पर कोई तरस न आया।

लोग नशे पीते हैं, अपना आप बर्बाद करते हैं व अपने परिवार का नाश करते हैं। इन्सान अपने जिस्म के साथ बम्ब बांधकर धर्म की दुनिया में शहीद हो रहे हैं। मरना और मारना ही जब धर्म समझ लिया जावे, तो बर्बादी के सिवा और क्या हो सकता है। हम अपने भले बुरे का कोई हिसाब नहीं रख सकते। हम खुद नहीं चलते। हमारे अन्दर के मालिक हमें हांकते हैं। हमेशा उनकी मर्ज़ी चलती है। वह हमारे सुख अनुराग है। जब अपना सुख बढ़ा लेते हैं तो वह सुख अनुराग हमारे मालिक बन जाते हैं। चाहे वह नशे का या खाने का, धन का या विषय वासना बढ़ाने का ही सुख हो। जिस तरह बन्दर सांप को घिसा-घिसा कर मारकर पटक देता है, उस तरह नीच अनुराग हमें नष्ट कर देते है। हमारे नीच सुख हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं मगर वह हमें प्यारे लगते हैं। हम सब नीच सुखों के गुलाम, नौकर व बन्धुए हैं। इस गुलामी को दिखाने वाली केवल एक हस्ती है। उनके सिवा और कोई नहीं है। सभापति जी ने अपने छोटे भाई की दर्दनाक घटना ब्यान की। वह सरपंच बनकर नशे पीने व पिलाने लग गए। शराब ने accident करा दिया। उनके गले का मनका टूट गया। फिर भी उसका इलाज हो गया। जब दोस्ती ही ऐसी वस्तु से लगा ली कि जिसका स्वभाव ही बेवफाई है, तो उनसे हानि, दुख और मौत के सिवा कुछ नहीं मिलता। मेरी अबोधता, मेरा अज्ञान मेरा नाश करता है। अपने अज्ञान में हमारी मौत है। एक-एक रोगी स्त्री को घी खाना मना करते हैं तो वह सुनती तक नहीं। सैक्स का अनुराग बढ़कर इन्सान का घृणित जुलूस निकालता है। यह विज्ञान का युग है। ज्ञान किसी का कुछ नहीं बनाता अगर वह ज्ञान नीच भावों के हाथ में है।

बड़े सुन्दर ढ़ंग से श्रीमान नौध सिंह जी का संक्षिप्त जीवन सुनाया गया। उनके अन्दर कमाल की क्रान्ति आई। नीच जीवन से बर्बाद होने वाले देवप्रभावों को पाकर एक सच्चे ऋषि का रूप धारण करके इस दुनिया से गए। स्वामी गोबिन्द राम जी और भाई मोहन देव जी की गाथाएं सुनाई गई। विषय विकारों की दुनिया में देवप्रभावों की जरूरत

है। जब यह मिलते हैं तो यह कोढ़ दूर होता है। हमारे M.P.s. बहुत बेइज्ज़ती से Parliament से निकाले जा रहे हैं। उन्होंने संसद में सवाल करने के लिए रूपए हासिल किए।

श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी के पिता जी की घटना ब्यान की गई। देवप्रभावों द्वारा हमारे अन्दर ऐसी सोच-विचार पैदा हो जाती है कि झूठे दावें या logic खतम हो जाते हैं

इस महोत्सव पर आकर कितने इन्सान अच्छे बेटे, बेटियां, भाई, पति, पटवारी या ईमानदार अफसर बने हैं। देवप्रभावों के कमाल के क्रिश्मे सुनाए गये। सभाओं से लाभ उठाने के हितकर नियम बताकर सभापति जी ने अपना प्रभावशाली ब्यान समाप्त किया।

इसके बाद मंत्री जी ने हितकर सूचनाएं और ड्यूटियां ब्यान की। हाज़रीन को जिन से पंडाल भरा हुआ था, अगले दिन का प्रोग्राम बताकर जय ध्वनि के साथ यह बहुत प्रभावशाली सभा सम्पन्न की गई।

15.12.05 समय : प्रात : 8.00 बजे

सभापतिः श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषयः भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

पहला गीतः ''सारे जहां से न्यारे, गुरुदेव हैं हमारे।''

भगवान देवात्मा का अर्चन, देवस्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद आशीर्वाद प्रार्थना की गई। फिर परम आवश्यक जीवनदायक वाला गीत गाया गया।

सभापति जी ने फरमाया कि परम आवश्यक का अर्थ है कि जिस के बगैर गुज़र न हो सके। ऐसा सम्बन्ध जो हमारे लिए जीवनदायक हो। बेजान हवा और आक्सीजन, पानी, खुराक और सूर्य का सम्बन्ध इन्सान के लिए परम आवश्यक है। इनके बगैर कोई जीवनधारी ज़िन्दा नहीं रह सकता। पृथ्वी भी परम आवश्यक जीवन दायक सम्बन्धी है। पशु में यह होश नहीं कि वह सवाल कर सके कि मैं क्या हूं। मेरा लक्ष्य क्या है। मेरा जीवन क्या है, वह बन रहा है या बिगाड़ रहा है। आम मनुष्य को भी इन सवालों के उत्तर नहीं मिलते। भगवान देवात्मा का आविर्भाव सबसे विचित्र बात है। उनसे जुड़कर सवालों के सही जवाब मिल सकते हैं।

हमारी हस्ती में हमारा शरीर और हमारा आत्मा है। मानसिक और सात्विक शक्तियां हैं। गुरु महाराज एक ऐसी हस्ती हैं कि उनके सम्बन्ध से सात्विक भाव बढ़ने लग जाते हैं। एक जन को सभा में अपने माता-पिता के साथ अपना सलूक बहुत स्वार्थपूर्ण, दुष्ट और दुर्व्यवहारपूर्ण नज़र आया। वह बुरी तरह हिले और रोये। वह दुख से भर गए। अपने मामू के चरणों में गिर गए। जो माता-पिता को सताते हैं, वह जीवन नहीं केवल रेंगनामात्र है। कुछ महीने पहले, उनको उस चाचा के चरणों में गिरा दिया जिनको वह मारने को फिरते थे और जिनका वह कर्ज़ दबाए फिरते थे। उन्होंने रो-रो कर 22000 रू वापिस किया। चाचा-चाची ने भी उनके ऐसा करने पर प्यार से उन्हें अपना बेटा बना लिया। हमारे अन्दर उच्च भावों का अभाव है। खासकर कृतज्ञता परहित भाव और आत्म हित के भावों का। देवात्मा का सम्बन्ध हर अंग में हमारा हित करता है। सरदार अनोख सिंह जी की हृदयस्पर्शीय घटना सुनाई गई। देवात्मा के सम्बन्ध ने उन्हें कब्र से निकाल कर क्या से क्या बना दिया।

हम नीचता के सूअर हैं। सूअर बाग में नहीं जाता। वह गन्दी सड़ी गली नाली में मुंह मारता है। हम दूसरों का हक मारते हैं, गल्त बोलते हैं, अश्लील टेप लगाते हैं। नशों का, नीच घृणा का,

ईर्ष्या का, द्वेष का जीवन भी कोई जीवन है। इसे जीना नहीं कहा जा सकता। यह तो सड़ना और गलना है। ज्ञान, पढ़ाई और पदवी से धर्म या उच्च जीवन नहीं आता। श्रीमती सवित्री सिद्धू का जीवन ब्यान किया गया। आगे चलकर सभापति जी ने कहा, ''मेरा जीवन मेरी काम वासना का था। देवात्मा ने मुझ कोढ़ी को बचा दिया। देवात्मा आत्मिक कोढ़ियों को बचाते हैं। देवात्मा नाना सम्बन्धों में नर्क दिखाते हैं और सम्बन्धों में नर्क को घृणित रूप में दिखाते हैं। मैं माता-पिता को शराब पीकर, घर से गैर हाजिर रह कर दुखी करता था, तड़पाता था, ऊंचा बोलता था, गरजता था। यह भेडियों जैसा बर्ताव मुझे नज़र नहीं आता था। देवात्मा ने अमृत देकर इस गन्दी जुबान को बदल दिया। अब यह सिर उनके आगे नहीं उठ सकता। एक गिरती हुई बहन को मैंने उठाया। फिर मैं गुरू के चरणों में गिरा कि सतगुरू मैं इस तरह के काम करने के लायक बिल्कुल न था। स्कूल में बच्चों का समय बर्बाद करता था। फिर सतगुरु ने Over Time लगाने वाला बना दिया। भगवान का सम्बन्ध हर अंग में हित लाने का है।''

यह सभा भी बहुत प्रभावशाली थी। अगला प्रोग्राम बताकर चार बार जय ध्वनि के साथ यह सभा सम्पन्न हुई।

पब्लिक तकरीर :- चार बजे शाम

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

पहला भजनः मेरे सतगुरु तुम्हारे बिन कहां मेरा ठिकाना हैं। सभापति जी ने ब्यान किया कि भगवान देवात्मा का कारज कोई नाम जपाने का नहीं, कोई सिमरन करवाने का नहीं। नीच जीवन मिटाने का है। इन्सानी जिन्दगियों में उच्च परिवर्तन लाने का है। मरती रूहों को दुख और नाश से बचाने का है। फिर सभापति जी ने बताया कि राजस्थान, हरियाणा और पंजाब के तीन युवक अपने निज के अनुभव और जीवन परिवर्तन अपने अपने शब्दों में हाज़रीन सामने ब्यान करेंगे।

फिर एक भजन : - भगवान तुम्हारे चरणों में जिसे आने का अधिकार मिल गया। इसके बाद श्रीमान जगदीश जी, श्रीमान सुखदेव जी और श्रीमान ज्ञान चन्द जी ने अपने अन्दर आए शानदार परिवर्तन का सरल शब्दों में बड़े सुन्दर ढ़ंग से और पाक आसूंओं के बहते हुए ब्यान किया। जिससे बहुत लाजवाब वातावरण बना। अधिकांश जनों के हृदय हिल गए और बेबस परमपूजनीय भगवान के आगे नतमस्तक होने लगे।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के पोते श्री विजय कुमार जी अग्निहोत्री साहिब ने जो इस शाम वहां उपस्थित थे अपने भावों का इज़हार फरमाया। हाज़रीन में से बहुत से जनों ने उनके चरणों में सिर रखकर और उन्हें सम्मान देकर अपना भला किया।

तीसरी सभा शाम 7.00 बजे: इस सभा में विकास के नियम पर बनी एक American Film दिखाई गई जिसे बहुत से हाज़रीन ने पसन्द किया।

16.12.05 महोत्सव का खास दिन

भजनों का गानः प्रातः 6.30 बजे के करीब सैंकड़ों जन फूल मालाएं लेकर सब मिलकर श्रद्धा और जोश से भरकर गीत गाने लगे। सारा वातावरण पाक खुशी और उल्लास से भर रहा था। धर्म सम्बन्धी पाक जोश से भरकर अपनी श्रद्धा के प्रकाश में सुन्दर गीतों का गान कर रहे थे। सूर्य की पहली किरण के साथ घंटा बज उठा जिससे भगवान देवात्मा की जय के नारों की गूंज चारों ओर से उठने लगी। सुन्दर बैंड भी खुशी के तराने बजाने लगा। इसके कुछ देर पश्चात सैक्रेटरी देवधर्म मिशन श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ऊँचे

स्थान पर खड़े होकर हाज़रीन को परमपूजनीय भगवान के आविर्भाव के साथ जुड़ने के महासौभाग्य को स्मरण करवाया। भगवान ने जो हमें बचाया है, हजारों इन्सानों का हित किया है, उस सारे दृश्य को पेश किया। श्रीअकबरपुर की भूमि, महाराज के माता-पिता व पूर्वजों को शत-शत बार धन्यवाद दिया और भगवान के कारज के चारों और फैलने की शुभकामनाएं कीं और हाज़रीन को खुशियों से भरकर नाचने और गाने और भेंटें देने की प्रेरणा दी। चार बार जय ध्वनि के साथ उन्होंने अपना ब्यान समाप्त किया। उनके ब्यान के बाद बैंड फिर सुन्दर ध्वनि में धुने अलापने लगा और चार-पांच जन बेखुद होकर खुशी से नाचने लगे और देर तक नाचते रहे। हाज़रीन कतारों की शक्ल में पंडाल में दाखिल होने लगे और अपनी-अपनी फूल मालाएं गुरु महाराज के चरणों में रखकर प्रणाम का साधन करने लगे।

महासभा : 8.30 बजे

सभापतिः श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय : भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता। धन और जन की अपील।

विकास के नियम को समझ कर जीवन के सब पहलुओं में सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। चारों जगतों में जो श्रेष्ठता आती है, उसी का नाम विकास है। भौतिक जगत, वनस्पति जगत का बहुत विकास हुआ है। पशु जगत का भी बेहद विकास हुआ है। जो बहुत ही विशेष है। चार्लस डारविन ने विकास के नियम का अध्ययन किया है। नबूला से सूर्य, सूर्य से इसके ग्रह अलग होने से विकास होता चला गया। पृथ्वी पर पानी का पैदा होना, वनस्पति जगत का पैदा होना, पशु जगत का पैदा होना, मनुष्य का पैदा होना और अलग-अलग पहलुओं में विकास करना, इसके अगले पड़ाव हैं। फादर डैमीयन, फलोरैंस नाईटिगेल, अब्रराहम लिंकन, मदर टरेसा, भगत पूर्ण सिंह, सरगंगा राम, न्यूटन, आईनस्टाईन आदि विकास प्राप्त मनुष्यों के दृष्टांत हैं। विकास ने इस से आगे फिर एक और छलांग लगाई। देवात्मा का अद्वितीय ज़हूर हुआ। देव शक्तियों के पैदा हो जाने से व विकास होने से देवात्मा धर्म की दुनिया में केवल एकमात्र सूर्य बन गए। देवात्मा व मनुष्य के भावों में श्रेणीगत अन्तर है। मनुष्य के सुख अनुरागी हृदय के अन्दर सत्य अनुराग नहीं पैदा हो सकता। देवात्मा के अन्दर शुभ अनुराग के साथ अहित के प्रति पूर्ण वैराग्य है। सत्य अनुराग के साथ मिथ्या के प्रति वैराग्य है। सत्य अनुरागी के लिए वैज्ञानिक विधि का अनुरागी होना आवश्यक है। नेचर को नेचर की शक्तियां चलाती हैं। त्याग के बगैर विकास नहीं होता। हमारा लक्ष्य वही होता है जिसमें हमारा सब से ज्यादा समय लगता है। हित अनुराग व सत्य अनुराग ने देवात्मा का लक्ष्य इस दुनिया से बिल्कुल निराला बना दिया कि

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार में ही जीवन यह जावे।''

नीच सुख अनुराग से पाप व झूठ पैदा हुए। शुभ अनुराग से हित व सत्य पैदा होता है। जिस तरह चूहे व इन्सान में श्रेणीगत अन्तर है, वैसे ही मनुष्य और देवात्मा में श्रेणीगत अन्तर है। सुख अनुराग कमजोरियों से भरा हुआ है। शुभ अनुराग में किसी प्रकार की कमज़ोरी का स्थान नहीं। सुख अनुरागी के अन्दर बल की कमी रहती है। शुभ अनुरागी भगवान आत्मिक बल के सूरज हैं। जीवन व्रत धारण करने के लिए भगवान देवात्मा को मिस मैरी कारपेंटर, महात्मा बुद्ध, मेजर टक्कर आदि के

दृष्टांतों ने ज़ोरदार रूप से प्रेरित किया।

भगवान देवात्मा ने 32 वर्ष की भरी जवानी में नौकरी से इस्तीफा देकर 1882 में ब्रह्म समाज लाहौर के अन्दर जीवन व्रत ग्रहण किया। क्या लोगों ने इस कदम का स्वागत किया? कदापि नहीं। परन्तु देवात्मा को उल्टे रूप में देखकर अपमानित व निरादर करने की भरपूर कोशिश की गई। उनको दुखी करने व तड़पाने की कोशिश की गई।

जीवन व्रत ग्रहण करने के समय शोर डालकर रुकावट डालने के लिए घोर शर्मनाक यत्न किया। गेरूवे वस्त्रों के सम्मान का वास्ता डालकर देवात्मा ने उनको चुप करवाया। भगवान देवात्मा ने नौकरी छोड़ कर ऐसे महसूस किया कि मैं आजाद हो गया हूं। व मेरी बेड़ियां कट गई हैं। सैंकड़ों नहीं परन्तु हज़ारों की संख्या में विरोधी पैदा हो गए। सुभाष चन्द्र बोस ने भारत की आज़ादी के लिए अपील की। पाप से आज़ादी, मिथ्या से आजादी व आत्मिक हानि से आजादी कौन समझाए? यह देवात्मा की ही दुनिया है।

डा. चन्दु लाल रेलवे के डाक्टर थे। वह लोगों को कहते थे कि यह (देवात्मा) डाकुओं के सरदार हैं। देवात्मा के एक व्याख्यान ने उन्हें बदल दिया। आप देवात्मा के मिशन में सारी आयु के लिए लग गए। पत्नी की अनेकों बार विरोधता बर्दाश्त की। भगवान को कंजर, खूनी, हत्यारा कहा गया। पैम्फलिट छाप कर देवात्मा के विरुद्ध बांटे गए। दो एडीटरों ने देवात्मा के खिलाफ अपमान जनक झूठे इलज़ाम छापे जिनको बाद में अपनी गलती मानने के लिए मजबूर होना पड़ा। बाद में अखबारों में अपनी गलती का इज़हार करके देवात्मा से माफी मांगी गई। चन्दा सिंह नामक एक वकील ने देवात्मा के खिलाफ झूठे 9 मुकद्दमे कर दिये। परन्तु झूठ की हार हुई व देवात्मा के सत्य अनुरागी कारज की जीत हुई। चन्दा सिंह को कैद हुई। उसका खुद का घर बिक गया जो देवआश्रम को नीलाम करवाना चाहता था। उसके बाद धर्मपाल की विरोधता, बच्चों की बेवफाई आदि का भगवान को सामना करना पड़ा। परन्तु अन्त में जीत देवात्मा की ही हई। देवात्मा के खिलाफ विराट सभा की गई। देवरत्न के कृतध्न तीर देवात्मा को सहने पड़े परन्तु सच्चाई व भलाई के लिए देवात्मा को सब सहन करना पड़ा। देवात्मा के ऊपर गोलियां चलाई गईं।

इसके बाद देवात्मा के विरलाप का पाठ करके सुनाया गया जिससे बहुत ही सुन्दर व हृदयस्पर्शीय वातावरण बन रहा था। इसके बाद धन व जन की अपील की गई।

बच्चों की सभा :-समयः- शाम 2.00 बजे

सभापतिः – प्रिंसीपल उर्मिल शर्मा जी के अधीन यह सभा हुई। 12 साल से कम उम्र के बच्चों ने अपने भोलेपन से भरे ब्यान किए। सब बच्चों को ईनाम वितरण किए गये। बड़ी हाज़री में हाज़रीन इस सभा से खुशी हासिल करते रहे। बच्चों की सभा के बाद Chandigarh Coaching Centre के बच्चों की टीमों ने पांच-छः बहुत सुन्दर गीतों का गान करके एक नया समय बांध दिया जिसे बड़ी संख्या में हाज़रीन ने पसन्द किया। साढ़े तीन बजे यह प्रोग्राम जय ध्वनि के साथ सम्पन्न हो गया।

पब्लिक लैक्चरःसमय : शाम 4:00 बजे

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

वक्ता : डा. विनोद जी खेड़ा

विषय : आत्मा के क्षेत्र में नवीनतम वैज्ञानिक अनुंसधान और उससे हमारे जीवनों को अमूल्य लाभ। वक्ता ने उपरोक्त विषय पर बहुत ज्ञानवर्धक और सुन्दर व सरल व्याख्यान दिया जिसे हाजरीन ने बहुत पसन्द किया। इस लैक्चर की रिपोर्ट अगले अंक में दी जा सकेगी।

17.12.05 8.00 बजे पहली सभा :–

सभापति :– श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

पहला भजन : अद्वितीय है रूप तुम्हारा, जन समाज में हे भगवन्! इसके बाद परमपूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन, देवस्तोत्र का गान और व्याख्या की गई।

उसके बाद दस सौभाग्यवान जनों को जिन्होंने नए सेवक सेवका बनना था आगे बिठाया गया। उनके नाम इस प्रकार हैं।

1. ***लाला दुनी चन्दी जी (गजसिंह पुरा, राजस्थान)***
2. ***श्रीमान खेम चन्द जी (सुपुत्र लाला दुनी चन्द जी, गजसिंह पुर)***
3. ***श्रीमान सुखदेव राम जी, गोनियाना मंडी***
4. ***श्रीमान सुनील दत्ता जी***
5. ***श्रीमान सुविन्द्र सिंह जी सुपुत्र श्री बलकार सिंह जी (मलेका)***
6. ***श्रीमान तिलक गिरी जी (चण्डीगढ़)***
7. ***श्रीमती निशा जी पत्नि श्रीमान चमन लाल जी***
8. ***श्रीमती लखविन्द कौर जी धर्मपत्नी श्रीमान बलकार सिंह जी***
9. ***श्रीमती वन्दना जी धर्मपत्नी श्रीमान अनिल कुमार जी***
10. ***श्रीमती गुरजीत कौर धर्मपत्नी श्रीमान राम चन्द जी***

उपरोक्त जनों का श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान अजीत सिंह जी ने बहुत अच्छा परिचय करवाया। जब परिचय करवाया जा रहा था। एक–एक पुराने जन में सत्संग के द्वारा पिछले कई सालों में आए परिवर्तन बताए जा रहे थे तब बहुत ही शानदार देव–प्रभावों की महिमा का वातावरण बन रहा था और अधिकारी हृदय परम पूज्नीय भगवान के सम्मुख बेबस झुक रहे थे और पाक खुशी से भर रहे थे और धन्य–धन्य हो रहे थे। इसके बाद ''करें हम बेनती सारे, जीवन का द्वार खुल जावे।'' फिर सब को भगवान देवात्मा के विजय पताका के नीचे खड़ा करके सभापति जी ने प्रतिज्ञाएं बोल–बोलकर करवाईं। फिर उनको फूलमालाएं पहनाई गई। बहुत से जनों ने उनका सम्मान प्रदर्शन किया व इस खुशी में दान भी दिया।

श्रेणी में उन्नति : इसके पश्चात् दो जनों को अर्थात श्रीमान सुखदेव सिंह जी और डा. मन्सा सिंह जी ग्रोवर को दूसरी श्रेणी में उन्नत किया। इन दोनों जनों का भी श्री सभापती जी ने बड़ा सुन्दर परिचय करवाया। इनके जीवन में आए हुए परिवर्तन को बहुत अच्छे ढंग से पेश किया गया। इन दोनों की सेवा और संग्राम और एक की परीक्षा में भली भांत उतीर्ण होने के बारे में ब्यान किया। जिससे हाज़रीन ने भी बहुत प्रसन्नता लाभ किया। सभापति जी ने इनको भी प्रतिज्ञा करवाई। इसके बाद इन दोनों का सम्मान प्रदर्शन किया गया और बहुत से हाज़रीन ने भी आकर इनके गले में फूलमालाएं पहनाई। और इस खुशी में धन भी दिया। इसके बाद दूसरी सभा, जो भाव प्रकाश की थी, शुरू हुई।

भाव प्रकाश

मुकेश चावला (मोनू)

भगवान देव आत्मा की जय

श्रीमान् जी,

मैं सुबह-शाम सभा में नहीं आता हूँ। मैं वातावरण से कट रहा हूं। मुझे आपके वातावरण में आकर अपने में कमी नज़र आई जो कि कहीं भी नज़र नहीं आई।

मैं देव धर्म का साहित्य पढ़ता रहता हूं। रोजाना पढ़ता हूं मगर सभा में नहीं आता हूं। यहां आने पर मुझे मालूम पड़ा कि मेरे में धन-अनुराग है। मैं लालची हूं मगर फिर भी धन का अनुराग छूटता नहीं है और श्री डा. मंसा सिंह जी ने बहुत जोर डाला मुझ पर कि (चण्डीगढ़) भगवान देवात्मा जी के जन्म-महोत्सव पर चलो मगर मैं हूं कि धन, नौकरी के कारण आना नहीं चाहता हूं मुझ में इतना धन का अनुराग है। मैं देव आश्रम में आकर अब सेवा-साफ-सफाई नहीं करता हूं। इस वातावरण में आकर मुझे मालूम पड़ा कि मेरे में बहुत कमियां हैं, मैं नीच इंसान था-हूं। मुझे इसका पहले मालूम नहीं पड़ा। मैं अपने को धार्मिक समझता था, अच्छा समझता था मगर यहां (वातावरण में) आकर पता चला कि मैं बुरा लड़का हूं। मुझे अपनी कमज़ोरियां नज़र आती हैं मगर अहंकार टूटता नहीं। मैं मां-बाप के आगे झुकता नहीं हैं। जो गलतियां मैंने की हैं वो नज़र आती हैं। मगर परिशोध करने की हिम्मत नहीं आती। मैंने जो किसी का बुरा किया है उसकी माफी मांगने की हिम्मत नहीं पड़ती। मैं कजूंस लड़का हूं। दान कभी नहीं किया। हर चीज में कजूंसी बरतता हूं। मैं धन अनुरागी, भोजन का अति अनुरागी हूं। मैं भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप उनके सम्बन्ध में मेरी ओर से क्या कुर्बानी होगी मुझे नहीं लगता कि मैं देव धर्म में आ सकूंगा।

मुझसे श्रीमान अमर सिंह, मोहन देव जी की तरह सेवा, त्याग या बलिदान नहीं हो सकेगा। चाहता तो हूं कि मुझमें ऐसे गुण आएं मगर मुश्किल सा लगता है। मुझे वातावरण में आने से कमी नज़र आई। मैं भगवान देवात्मा जी का और आप जी का, डा. जी का, देव धर्म का धन्यवाद करता हूं। मुझे माफ करना पूजनीय भगवान देवात्मा का 155 वां शुभ जन्म-महोत्सव आप सब को मुबारक हो, सत्य देव की जय हो आपका आर्शीवाद दान मागता हूं।

नीलम रानी सुपुत्री श्रीमान् राम चन्द जी

सत्यदेव की जय

मैं गांव दड़वी में रहती हूं। मेरे पिता जी व ताया जी सेवक थे। लेकिन आज मेरी माता जी श्रीमती गुरजीत कौर भी सेवका बनी हैं। मुझे नाज़ है कि मैं ऐसे मां-बाप की बेटी हूं। मेरा दिल तो बहुत चाहता है कि हर सभा में पहुचूं लेकिन कुछ समस्याएं मुझे रोक लेती है। श्रीमान बलकार जी को बहुत धन्यवाद करती हूं। और परलोक में उनके लिए शुभ कामना करती हूं उनका मेरे ऊपर बहुत कर्ज़ है जो मैं कभी भी उतार नहीं सकती क्योंकि मेरा ससुराल परिवार बेरोज़गार था। उन्होंने मेरे ताया अजीत सिंह, ताया सुन्दर लाल व पिता राम चन्द से सलाह करके हमारी दुकान कराने की स्कीम की। उन्होंने अपने पास बुलाकर हमें (पति-पत्नी को) काम सिखाना शुरु किया जिसमें चाची जी, श्रीमती लखविन्द्र जी ने हमारा पूरा साथ दिया और अपना खर्चा कर के हमें काम सिखाया और 2 महीने के

अन्दर 9 अप्रैल को हमारी दुकान का महूरत करवा दिया। हमें रूपए का कोई फिकर न होने दिया और ताया जी श्रीमान अजीत सिंह व श्रीमान सुन्दर लाल, श्री आत्मा राम व पिता श्रीमान राम चन्द ने इन्होंने आपस में ही संभाल लिया। हम इनके बहुत एहसानमंद हैं। धन्यवाद करते हैं इनका। इनका कर्ज़ ही नहीं, बहुत सारे एहसान हम पर हैं जो कभी भी चुका नहीं सकती। दुकान को करे अभी 14 दिन ही हुए थे कि मेरे चाचा श्रीमान बलकार जी परलोक सिधार गए। बहुत बहुत एहसान करके कर्जदार बना के चले गए हम उनका तो कर्ज कभी दे ही नहीं सकते लेकिन हम आज भी उनकी धर्म पत्नी श्रीमति लखविन्द्र कौर को अपना गुरु मानते हैं और कितना हो सका हम उनका कर्ज़ उतारने की कोशिश करेंगे। आज मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरी चाची जी, श्रीमती लखविन्द्र कौर व भाई सतिन्द्र कुमार गुरु सेवक बने हैं। मैं आशा करती हूं कि चाचा जी श्रीमान बलकार जी की आत्मा को बहुत खुशी मिली होगी और मैं इन तीनों की खुशी में 50 रू. दान में देती हूं और आशा करती हूं मैं हर सभा में पहुंचने की कोशिश करुंगी। कभी किस्मत में हुआ तो सेवका भी बनूंगी।

धन्यवाद।

इन्द्र भूषण भण्डारी

धन्यवाद श्री बलदेव सिंह जी व डा. विनोद खेड़ा जी

भगवान देवात्मा मैमोरियल फाउंडेशन ने बहुत सुन्दर किताबें छापी हैं। बहुत सुन्दर किताबें हैं। उनका मटीरियल, गैट अप और प्रिंट अति सुन्दर है। मैंने किताबें ली हैं, औरों को भी पढ़ने के लिए दूंगा।

इनको भगवान् का आशीर्वाद मिलता रहे, और ये तन्दरुस्त रहें।

खेड़ा साहिब की फैमली के साथ मेरा भी 50 साल से ऊपर संबंध है। उससे पहले मेरे पिता जी का संबंध रहा है।

भगवान जी का जन्मदिन किसी विवाह-शादी से कम नहीं है। बहुत खुशी की बात है, बहुत धूमधाम से मनाया गया।

इतनी सुन्दर इमारत है। खूब दिल खोलकर धूमधाम से लाइटिंग करनी चाहिए। खूब लाइटिंग अन्दर-बाहर होनी चाहिए। थोड़ा खर्चा है। कोई बात नहीं।

तीन दिन महोत्सव पर मुफ्त लंगर होना चाहिए। लोग अपने आप दान देंगे। चाय और नमकीन आदि मारकीट से कम दाम पर ज़रुर देने चाहिएं। बहुत ज़रुरी है।

जनरल अपील करनी चाहिए कि दान दिल खोल कर दो। दान की कोई कमी नहीं रहेगी।

बहुत-बहुत धन्यवाद श्रीमान् बलदेव सिंह जी व डा. विनोद खेड़ा साहिब जी का। बहुत अच्छा उत्सव मनाया गया है।

मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि इस सुन्दर शहर, चण्डीगढ़ में परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 155 जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया गया। सभाओं में शामिल होकर मुझे अद्भुत लाभ हुआ है।

माता-पिता के बहुत गुण नज़र आये। मैंने उनके प्रति बहुत गलतियां कीं, और अपनी कमियां नज़र आयीं। उनसे कई बार माफी मांगी। अब भी उनसे माफी मांगता हूं।

प्यारी मां ने जन्म दिया है और उनका कर्जा नहीं उतार सकता। तिलफल सेवा करने का सुनहरी मौका मिला। कई बार मैंने कहना, माफ करना अगर कोई सेवा में कमी हो। उन्होंने कहना तू श्रवण पुत्र है। इस सेवा में मेरी पत्नी व बेटी का पूरा-पूरा सहयोग रहा। इनके सहयोग के बगैर

इतना शुभ कार्य नहीं हो सकता था। मेरे भाइयों ने और भाभियों ने भी तन, मन और धन से उनकी सेवा की। माता-पिता का बहुत कृतज्ञ हूं कि उन्होंने बहुत अच्छी शिक्षा दी है और अच्छी धर्म पत्नी चुनने में सहयोग दिया है। धन्यवाद, सत्यदेव की जय। सभा में शामिल होकर लाभ उठाऊंगा।

मोनिका भण्डारी

आदरणीय सभापति जी, सत्कार के योग्य डा. विनोद खेड़ा साहिब तथा अन्य सभागण,

मैं श्री इन्द्र भूषण भण्डारी साहिब की बेटी हूं। मेरे दादा जी श्री रामकरण दास भण्डारी देव समाज में बहुत सारी सभाएं अटैन्ड करते थे और घर में भी सभा करवाते थे। मैं बचपन में अपने दादा जी के साथ सभा में जाया करती थी। कुछ सालों से लगातार मैं भगवान देवात्मा के जन्मदिवस पर आती हूं। माता-पिता के साथ आकर मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरी दादी जी, श्रीमती विद्यावती जी के अन्तिम समय में मेरी माता जी श्रीमति उषा भण्डारी व मेरे पिता जी श्री इन्द्र भूषण जी ने बहुत सेवा की जिसका बयान नहीं किया जा सकता है। मैं प्रण करती हूं कि मैं सदैव यहां आती रहूंगी और वर्षभर की सभाओं में आकर लाभ उठाऊंगी।

धन्यवाद।

श्रीमान तेज राम शर्मा (मोगा)

धर्म सम्बन्धियो,

पहले तो नत मस्तक आपको प्रणाम और सत्यदेव की जय करता हूं फिर पूजनीय सत्गुरु के इस पावन महोत्सव पर पहुंचकर पाए लाभों का ज़िकर करता हूं। साथियो! मैं देव समाज से बहुत समय से जुड़ा हुआ हूं। जितना निकट हुआ हूं उतना ही धन्य-धन्य हुआ हूं और जब कभी दूर रहा हूं, इसमें कसूर मेरा है या कि किसी दूसरे का, घाटा मुझे पड़ा हैं। आठ-नौ साल का समय बाहर गुजारा है या गुजारना पड़ा है। इसमें मेरी बहुत हानियां हुई हैं। बेशक पाठ विचार का सिलसिला नहीं टूटने दिया और विविध हितकर कामों में भी अपने आपको लगाए रखा परन्तु अपना आत्मा सत्संग के प्रभावों से वंचित रहकर दुर्बल हुआ है जिसको महसूस करके पावन महोत्सव पर पहुंचने का इरादा किया। फोन पर पता किया और कच्छ गुजरात से चलकर मोगा पहुंच गया। फिर मन में आया कि थोड़ा रास्ते में और काम करते चलें, वहां एक दिन पीछे चले जाएंगे परन्तु श्रीमान् जी का बहुत धन्यवाद महोत्सव को प्राथमिकता देने का आदेश ज़ोर से दिया, उनका बहुत धन्यवाद।

पहली सभा के मण्डल में बैठकर गुरु की मेहरबानियां सामने आने लगीं। धर्म सम्बन्धियो में! महान गुरु के सम्पर्क में आकर मेरा शराब या अन्य नशा नहीं छूटा, अण्डा और मांसाहार नहीं छूटा, चोरी और जुआ आदि नहीं छूटा, वह तो मैं करता ही नहीं था परन्तु इनके न करने से जो मेरे अन्दर घमण्ड बना हुआ था कि मैं बहुत बढ़िया हूं, दूसरों से महान हूं, वह किसी ईश्वर भक्ति या देव पूजा ने नहीं छुड़ाया था। पहली सभा में ही बहुत से हितकर दृश्य दिमाग में घूम रहे थे। सामने आया जो पाप या अपराध मैं नहीं कर पाया था वह मेरी खूबी नहीं थी। वह सब संस्सार का वश था और अगर गुरु का दर नहीं मिलता तो वह भी होने थे। यदि गुरु कृपा से मैं आज्ञाकारी और नेक बेटा बना तो उसके बदले में अपने उपकारी माता-पिता से कितना स्नेह सत्कार और सम्मान पाया। वह भी तो गुरु की देन है।

सभा में कितने हितकर प्रसंग और झाकियां पेश की जाती रही हैं जिनके प्रभाव से बेबस आंखों से आंसू बहते रहे हैं। उच्च भावों से भरे भजनों का गान ही उत्साह से भर देता रहा है। अपनी परिवर्तन

कथाओं को सुनाकर धर्म सम्बन्धियों ने अपना भला तो किया ही साथ मण्डल को बढ़िया और हितकर बनाकर दूसरों के भले के हेतु बने हैं। कल के खेड़ा जी के पब्लिक लैक्चर में बात को बहुत हितकर ढंग से पेश करके ज्ञान और विचार दोनों को खुला किया है। मैं जानता था और लोगों को बताता था कि यदि मां बहुत गुस्से में हो और उसी हालत में अपने बच्चे को दूध दे, तो बच्चे को उल्टी आ जाती है। परन्तु यह नियम अपने पर लागू नहीं किया था। संगत से दूर रह कर मन काफी कठोर हो गया था। एक घटना ऐसी घटी जिससे मुझे बहुत गुस्सा आया। जिसमें मैं बहुत सख्त फैसले पर पहुंच गया कि 72 वर्ष संसार में अच्छा बुरा जी लिया हूं अब इस वजूद को तो खत्म करना है। क्या होगा जेल या फांसी? क्या बिगड़ेगा रोटियां खानी हैं परन्तु इसको नहीं छोड़ना। ज़मीन का एक टुकड़ा साड़े तीन लाख में बेच दिया, कारोबार से जी हट गया और मन दिन-रात यही विचार चलता रहा कि जितना जल्दी हो सके सब समाप्त करके अपने फैसले को रूप देना है। हुआ क्या दिन चर्या भी वही है, खान-पान भी वही है परन्तु स्वास्थ्य दिन-दिन कमजोर होने लगा होमियोपैथी की दवाएं साथ में थीं लेता रहा परन्तु जो लाभ पहले होता था वह अब नहीं। यहां पहुंच गया कल दोपहर मोहाली में एक होमियोंपैथी डाक्टर को ढूंढने निकला। नहीं मिल सका। शाम के लैक्चर में पहुंच गया। खेड़ा साहिब द्वारा गुरु के प्रभाव मिले कि आत्मिक दुर्बलता और विकार ही शरीरिक दुर्बलता का कारण है। बात समझ में ही नहीं आई दिल में घर कर गई और बिना किसी दवाई के ठीक महसूस कर रहा हूं।

बहुत आदर सम्मान श्रद्धा के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी से क्षमा मांगता हूं कि जाने और अनजाने उनके सम्बन्ध में मेरे से कोई गलती हुई हो तो मुझे क्षमा करें अपने जीवन के व्यवहारों से वह जितने संग्रामशील, उत्साही और सेवाकारी बन-बनकर गुरु कार्य में लगे हुए हैं आज के समय में उनकी मिसाल वह आप ही हैं।

मैं अपने बाकी जीवन का गुरु कृपा से उनके अधीन चल कर अपना भला करने की आकांक्षा रखता हूं।

धन्यवाद।

मधुसूदन जी दडुआः पहले दिन से ही मुझे बहुत लाभ हुआ है। अपनी नीचता नज़र आती है। ईमानदारी पर भी बार-बार ध्यान जाता रहा है। अपनी नीच घृणा की तस्वीर नज़र आती रही है। "नेचर तुम संग में मिल जाऊं" वाले भजन से बहुत असर होता रहा। मैं भी घर में पक्षियों को दाना-पानी डालने की सेवा करता रहा हूं। कई दिन से दाना खत्म हो गया। मैं नहीं लाया। अब तक भी नहीं ला सका। (रो-रोकर) अपनी गलती महसूस हुई है। कल-परसों छोटा बच्चा रोटी खा रहा था। उसने रोटी के छोटे टुकड़े करके पक्षियों के लिए डाल दिए। चिड़िया आई और खाकर खुश हो रही थी। मेरे भाई के बच्चों ने बच्चों की सभा में भाग लिया। उससे मुझे बहुत खुशी हुई है। अब नीचता की तरफ गहरा ध्यान गया है। उसको कम करने की इच्छा पैदा हुई है जितना कुछ दान मिला है उसका ब्यान नहीं कर सकता।

श्रीमान राम चन्द्र जी मल्लेकाः मैंने पश्चाताप करना है। मेरी पत्नी जी सेवका बनी है। मैं पत्नी से क्लेश करता था। यह नज़र आकर मेरा सिर शर्म से झुक रहा था। घर में जो बखेड़ा रहता है उसमें मेरा ही हाथ रहता था। उनका भाई कोई नहीं है। इसलिए मैं उन पर और भी अधिक अत्याचार करता रहा हूं। वह बहुत ज्यादा बीमार रही। मेरी

लड़की यहां पर बैठी हुई है। मेरी धर्म पत्नी एक बार अपनी जवान लड़कियों को कह रही थी कि यह तुम्हारी शादी का सामान तैयार पड़ा है। आप दोनों आपस में बांट लेना। मैं जिन्दा रहूं या न रहूं। मैं पत्नी के सेवका बनने पर स्वागत का हौंसला भी न कर सका। पहले उनसे अपने इतने अत्याचार के लिए माफी (जारो कतार रो-रोकर) मांगता हूं। मैं अपने भाई व भाभियों से भी माफी मांगता हूं। फिर उन्होंने स्त्रियों की तरफ जाकर अपनी पत्नि के गले में हार डाला व माफी मांगने के लिए उनके चरणों में गिरने लगे। उससे पहले उनकी पत्नी बहते हुए आसुओं के साथ उनके चरणों में झुक गई। बहुत ही मार्मिक दृश्य था। कितने ही जन अपनी आंखों से ऐसे सुन्दर दृश्य को देखकर आंसू बहा रहे थे।

श्री हरकिशन लाल जी मैं अपनी घरवाली पर थानेदारी करता था। एक दिन वह खेत में रोटी लेकर कुछ लेट पहुंची। इस पर मैंने उनको बहुत अधिक पीटा। यह मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। मैंने उनसे इस पाप के लिए माफी मांगनी है। घर के नीच वातावरण में मेरा ही बड़ा दोष है। पुरानी गलतियां नज़र आ रही हैं। मेरे अन्दर बहुत ज्यादा पाप हैं, वह नजर आए हैं। जब मैं इस प्रोग्राम के लिए आ रहा था तो मुझे लोग ताना दे रहे थे कि आप किधर को जा रहे हो। मैंने उन्हें ऐसे ही कहा कि जरा घूम फिर आएंगे और चण्डीगढ़ देख आएंगे। वैसे मुझे सत्संग के वातावरण के बारे पता था कि इस जगह कमाल का वातावरण होता है। मैंने यह हृदय में प्रण किया है कि आगे से अपनी धर्मपत्नी पर कदाचित हाथ नहीं उठाना चाहे कुछ भी हो जाए।

उन्होंने अपने कालेज के समय की एक घटना सुनाई जिसमें उन्होंने बताया कि मेरे एक रिश्तेदार की सिफारिश पर एक परिवार ने अपने घर में मुझे रहने के लिए कमरा दे दिया। बेशक उनके यहां एक जवान कंवारी बेटी भी थी। मैंने वहां रहते हुए उनकी बेटी की तरफ कभी आंख उठाकर नहीं देखा और दिल में अपनी बहन की तरह महसूस करता रहा। इसका उस परिवार पर बड़ा जोरदार असर पड़ा। वह मुझे अपने घर का ही एक सदस्य समझने लगे और यहां तक कि मुझे वही खाना खाने के लिए मजबूर कर दिया और मेरे कपड़े आदि भी अपने आप मुझे अपना समझकर धोने लगे।

श्रीमान आसा सिंह जी पदमपुर शिवदर्शन जी गोपाल ने इस सत्संग को अपने ग्रह में होने देकर हमारा भला किया गया है। प्राय: 85 वर्षीय श्रीमान जी ने कहा कि मैं अपना एक गुर्दा दान देना चाहता हूं। कोई जरूरतमंद ले ले और मेरा भला कर दे।

श्रीमान अवतार सिंह जी मोगा: घर से चलते वक्त मुझे बहुत से काम नजर आ रहे थे। आने में कदम आगे नहीं बढ़ रहे थे। मेरी नेक धर्म पत्नी बच्चों की तरह समझा-समझाकर इधर ले आई है। मेरा बड़ा भला हुआ है। हम दोनों को पहली सभा से ही अपनी एक बच्ची का घात करने का पाप याद आकर बेहद दु:ख दे रहा है। बहुत दु:ख हुआ। बहुत रोते रहे। ऐसी सुन्दर बच्ची को शमशान में जाकर दबा आए। (बहुत दु:खी दिल से) हाय! अब ऐसे पाप का परिशोध कैसे करें। यहां बहुत ही स्वर्गीय मण्डल है।

इसकी बहुत महानता महसूस हो रही है। डरता हूं फिर बाहर जाकर इस मण्डल की कीमत भूल न जाऊं। आगे से ऐसे नायाब वातावरण में आने के लिए कभी आना-कानी नहीं करूंगा। नेक पत्नी जैसे कहेगी वैसे करूंगा। बाहर ऐसे वातावरण का लेशमात्र भी नहीं है।

श्रीमान जी हमारे लिए बहुत ही संग्राम करते हैं। मुझे जितना चाहिए उतना सहयोग नहीं देता। हम 25-30 जन दोस्त थे। इकट्ठे शराब व मांसाहार आदि का सेवन करते थे। उनमें से आधे नशों ने और कुछ रोगों ने खा लिए। काश! हम इस वातावरण से सदा जुड़े रह सकें और सदा लाभ उठावें। इसके बाद उन्होंने लेट कर महाराज के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम किया।

श्रीमान प्रेम सिंह जी बणी (हरियाणा) मैं देवी जैसी पत्नी पर शेर की तरह गरजता था। वह भेड़ियापन अब याद आकर दु:खी करता है। मेरा बड़ा गन्दा जीवन था। एक गरीब किसान जिसके तीन-चार छोटे-छोटे बच्चे थे उसका मन्दा हाल देखकर मेरे पिता जी उसको हमारे घर ले आए। उन्होंने उसके बाल-बच्चों की रक्षा की। मैं दुष्ट उनकी गोलक से चोरी करके जुआ खेलता रहा। अपनी इस नीचता के लिए पिटाई भी हुई। मामी जी ने मेरी बड़ी सेवा की है। बड़ी कुर्बानी की है। इसके बदले में मैंने उनको बहुत दु:ख दिए हैं। मुझे उन्होंने बस एक जन्म नहीं दिया, मेरी पालना में अपने बच्चों जैसा प्यार दिया है।

मेरा इस जगह आकर बहुत ही भला हुआ है। मैं कल्याण सत्संग में ज़रुर आऊंगा।

श्रीमान सुन्दर लाल जी मल्लेका यह मनुष्य जो आपके सामने खड़ा है वह बहुत ही अदना वजूद है। श्रीमान जीत सिंह जी मुझे बहुत सम्मान देते हैं। श्रीमान गुरदेव राज जी का उपकार नजर आ रहा है कि वह एक फोन करने पर ही मेरी जमीन बोने के लिए तैयार हो गए। सब घरों में मेरा सत्कार होता है। सब सम्बन्धों में स्वर्ग आ रहा है। मैंने अन्धेपन में मां का बहुत अपमान किया है। मां को सदमे लगा-लगाकर मैंने मारा है। अब मां की फोटो को बार-बार प्रणाम करता हूं।

अपने को फिटकार डालता हूं। दु:खी और शर्मसार होता हूं। बड़े भाई और भाभी जी को सुबह उठकर हम सब प्रणाम करते हैं। लोगों ने हमें ऐसा करते देखकर हमारे बिगड़े मसले झट सुलझा दिए। बड़े भाई को प्रणाम करने का लोगों पर बहुत असर है। मेरी पुत्रवधु को इस सत्संग पर आकर बहुत लाभ हुआ है। मेरे बड़े लड़के ने कल्याण सत्संग से वापिस आकर बस अड्डे पर ही मिलने पर सड़क पर लेटकर प्रणाम किया। फिर घर पहुंचकर माता-पिता और ताया-ताई जी को हार पहनाकर प्रणाम किया। इस माहौल से जुड़ने के लिए मैं कहता हूं बिल्कुल देर नहीं लगानी चाहिए। उपकारी नजर आते हैं व उनके बेहद उपकार सामने आते हैं।

श्रीमान बूटा सिंह जी कल्याण उपकारी याद आए हैं। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बहुत उपकार किए हैं। पिछले दिनों इनके ऊपर कितने कष्ट आए। घर में कई सदस्य एक के बाद दूसरा सख्त बीमार पड़ता गया। मैं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का कर्ज़ा उतार नहीं सकता। मैं इनके विरुद्ध कोई बात सुन नहीं सकता। (रो-रोकर) इन्होंने मेरी मरती हुई पत्नी बचाई है। काश! मैं इस उपकार को कभी न भूलूं। एक साल में हस्पताल में उनका इलाज करवाने में मेरी मदद की है। श्रीमान जी मुझे मैडिकल कॉलेज ले गए। वहां रखकर इलाज करवाया। (वह बेबस जोर-जोर से रोते रहे) आगे से महोत्सव की तैयारियों में 2 दिन पहले आकर शामिल हुआ करूंगा।

श्रीमान गुरदेव राज जी: मैं 10 साल से सेवक बना हुआ हूं। मैंने किसी को इस महोत्सव पर लाने के लिए संग्राम नहीं किया। जब हमारी बस चली तब 62 जन मिल कर इस जगह पहुंचे। पंडाल की शोभा देखकर धन्य-धन्य हो गया।

ठहराने का व लंगर का शानदार प्रबन्ध

हुआ। जब एक एम. ए. कर रहे बच्चे ने अपने पिता जी के सम्बन्ध में व अपने कर्मचारी जनों के सम्बन्ध में अपनी नीचता को देखा और पिता और कर्मचारी दोनों के चरणों में रो-रोकर माफी मांगी, उस बच्चे के जीवन की कितनी ही महिमा महसूस होती रही। मेरे अन्दर अभी भी कुछ पुरानी खराब बातें जो अन्दर ही अन्दर चली चलती है, वह नज़र आई, ऐसी प्रार्थना करता हूं कि मुझे और बल मिले और मैं उनको छोड़ सकूं।

श्रीमान बलदेव सिंह ढाणी मल्लेका धर्म सम्बन्धियों की बड़ी कृपा है कि वह किस तरह हमारे ऊपर संग्राम करते हैं। उनको बारम्बार धन्यवाद देता हूं। श्रीमान अजीत सिंह जी का बच्चा हीरा है। इनके भावों को जानकर बेहद खुशी हुई है। यह जरुर गुरु का काम करेगा। श्रीमान अजीत सिंह जी हमारे गांव में बहुत प्रसिद्ध मनुष्य बनेंगे। सारे गांवों का सिरा बनेगा। उनके व्यवहार में बिल्कुल सच्चाई है, ईमानदारी और नेकी है। इस खुशी में 50 रुपये दान देता हूं। अगर कभी मेरे बच्चे में ऐसा परिवर्तन आए तो मैं 5100 रुपये दान देकर खुशी हासिल करुंगा।

श्रीमान् हरदेव सिंह जी: मेरा यहां आने का इरादा नहीं था। मुझे धर्म सम्बन्धी लेकर आए हैं। गुरदेव राज जी ने मेरा खेत बोया है व उसके पकाने में हमारी हर सम्भव सहायता की है मेरी बहुत ही सेवा की है। मैंने 'धर्म जीवन' पढ़ना शुरु किया। उसमें पढ़ा कि सच्चा सेवक वही है जो महोत्सव पर आए। यह बात दिल से निकल गई। फिर इन पत्रिकाओं को घर-घर पहुंचाकर आया। मैं पक्का इरादा करके यहां आ गया। समाज से परे होकर अपना ही बुरी तरह नुकसान होता है। बहन जी ने बहुत उपकार किए हैं। भाई अजीत सिंह जी ने रस्सा डालकर पकड़ रखा है जिससे बहुत हित हुआ है।

श्रीमान सतिन्द्र सिंह (बग्गा) जी मुझे यहां बेहद उत्साह और प्रेरणाएं मिल रही हैं। अपनी कमियां और नीचताएं नजर आई हैं। मैं ना-शुक्रा हूं, मैं श्रीमान जी को सम्मान नहीं देता था, उनका मुंह नहीं देखता था। आज में बड़ा खुश हूं। इस जगह आकर व उपदेश सुनकर धन्य-धन्य हो गया हूं। मेरे लिए ऐसे गुरु के चरणों में रहने में ही मेरी रक्षा और विकास है। मेरे अन्दर ऐसे मिशन के लिए काम करना महासौभाग्य महसूस होता है।

मैं इस गुरु का कारज करके महासौभाग्य महसूस करुंगा। वर्डसवर्थ ने कहा है कि नेचर हमें कभी धोखा नहीं देती। मैं अपना बौना सिर गुरु के चरणों में झुकाता हूं जो मेरा प्रकृत रूप दिखाते हैं। **श्रीमान जीत सिंह जी** पाठी हो जाना, जत्थेदार बन जाना या और मान्यता प्राप्त कर लेनी इस कदर बेअर्थ साबित हुई है कि मैंने जिन्दगी में कभी माफी शब्द बोलने का अवसर तक नहीं पाया। घमण्ड ने मुझे मेरा असल रूप देखने न दिया। मैं पहली बार अपनी पत्नी को धर्म पत्नी कह रहा हूं। मेरी धर्म पत्नी ने पशुओं की तरह सारा जोर लगाकर मेरी व मेरे बहन भाईयों की बच्चों की तरह बहुत साल सेवा की है, बड़े-बड़े कपड़ों के ढेर धो-धोकर दिए हैं। तब भी इनको सम्मान नहीं मिला, लताड़ ही मिली है। जिसने इतनी जी तोड़ सेवा की है, मैंने उनको सताया है व दु:खी किया है। मेरी पत्नी ने ऐसे हीरे बच्चे पैदा किए हैं। मेरा बेटा दूसरे बच्चों के साथ खेलने गया, तीन-चार दिन बाद खेलने से हट गया। इसलिए कि वहां गाली-गलोच होती थी। मैं अपनी पत्नी को चूं नहीं करने देता था। उनका अपमान करने के लिए तह दिल से उनसे माफी मांगता हूं। उन्होंने आसूं बहाते हुए धर्म पत्नी जी के पास जाकर उनके गले में हार

पहनाकर व सिर तथा पगड़ी पावों में रखकर माफी मांगी। बड़ा ही स्वर्गीय दृश्य पैदा हुआ। हाज़रीन में अधिकांश जन पाक आंसू बहा रहे थे। अब अपने मन-मन में महसूस करता हूं कि शायद माफ कर दिया होगा। आयंदा मैं इसकी सब बातें मानूंगा सिर्फ गुरु शिक्षा से बाहर की बातों को छोड़कर। मेरे बच्चे खाने, कपड़े और फीस आदि के अतिरिक्त एक पैसा ज़्यादा खर्च नहीं करते। काश! वह सदैव ऐसे बने रहें। गुरु महाराज ने हमें घोर दलदल से निकाला है। उनकी मंझली बेटी ने स्टेज पर आकर सबके सामने अपने बुरे बर्तावों के लिए पावों में गिरकर माफी मांगी। यह सब देव प्रभावों का करिश्मा था। इसके बाद उन्होंने सतिन्द्र सिंह जी को खड़ा किया। उनको हाथ बांधकर प्रार्थना की कि आप माता-पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया करें। इन्होंने सबके सामने खड़े होकर प्रणाम करने की प्रतिज्ञा कर दी। एक और साथी को खड़े करके प्रार्थना की कि आप अपने बड़े-भाई व भावजा को सुबह उठकर प्रणाम किया करें। उन्होंने भी ऐसा करने की प्रतिज्ञा की। एक और नौजवान से पिता जी (फोटो द्वारा) और माता जी को प्रणाम करने की प्रतिज्ञा करवाई। बहुत ही सुन्दर हृदय स्पर्शीय दृश्य पैदा हुए।

श्री बलबीर सिंह जी इन्होंने हमेशा के लिए सारे नशों और शराब-मांस को छोड़ देने की प्रतिज्ञा की। इस प्रतिज्ञा से बहुत से जनों में खुशी की लहर दौड़ गई।

श्रीमती हरजिन्द्र कौर जी (श्री बलबीर सिंह जी की भाभी जी) इस बात से मुझे बेहद खुशी मिली है कि मेरे देवर भाई ने शराब छोड़ दी है। मांसाहार व नशे छोड़ दिए। हमारे घर में अब स्वर्ग आने लगा है। अपने सास-ससुर जी को सुबह उठकर रोज प्रणाम किया करूंगी।

श्रीमान भागीरथ जी (मलवानी, राजस्थान) मैं जिनके साथ आया हूं वह मेरे सत्कारित जन हैं। मैंने कुछ धार्मिक किताबें पढ़ रखी है। गन्दे संस्कारों से बचा हुआ हूं शराब आदि को तो मैं देखना भी नहीं चाहता। मांस का नाम तक लेना नहीं चाहता। बचपन में पांचवी जमात से बीड़ी पीने लग गया था। दो-तीन बण्डल पी जाता था। गावों में हमारे टीचर ने कहा कि मैं बीड़ी पीता हूं। मेरे को देखकर बीड़ी मत पीओ। जिस तरह धुएं द्वारा कालापन हो जाता है, उसी तरह बीड़ी पीने से इन्सान के शरीर के अन्दर कालापन छा जाता है। मैंने उस दिन से बीड़ी पीना छोड़ दिया। उन्होंने दूसरों को बीड़ी छोड़ने का तरीका बताया। मैं ब्यान नहीं कर सकता कि इस जगह का वातावरण कितना अच्छा है। आज के बाद मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि पिता जी को फोटो द्वारा और माता जी को रोज प्रणाम किया करूंगा।

श्रीमती भजन कौर जी (गुरु हरसहाय) मुझे इस बात की बड़ी खुशी है व बधाई की पात्र हूं कि मेरा भाई दूसरी श्रेणी में हुआ है।

श्रीमान सरताज सिंह जी मेरा जन्म पंजाब के ज़िला बटाला में हुआ! हमारे परिवार की कहानी बहुत ही दु:खभरी है। हमारे ज़मीन के झगड़े के कारण मेरे बहुत ही नौजवान व बहादुर चाचा को उनके ऊपर तेल छिड़ककर जला दिया। उनको जला हुआ मैंने देखा। मेरी भुआ जी की इज्ज़त लूटकर उनको मारकर रस्सी से लटका दिया। (बहुत रो-रोकर) हमारे पिता जी ने जो कुछ किया है उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। जब हम वहां से आए तो उन्होंने हमें रोटियां बनाकर खिलाईं। पिता जी का हृदय बहुत अच्छा था परन्तु मैं उनको दु:खी करता था। समाज में आकर मैं

माता जी के उपकारों को तो सामने लाता था व उनके सम्मान देता था परन्तु पिता जी के उपकार सामने नज़र नहीं आते थे। गुरु महाराज की कृपा हुई। जब मैं एम.ए. में पढ़ता था तो फर्स्ट क्लास के साथ पास हुआ। इन्टरव्यू में मेरे से पूछा गया कि अगर आपको चांद पर जाकर खड़े होने का अवसर दिया जाए तो वहां से आप किस चीज को, किस व्यक्ति को देखना पसन्द करोगे। मैंने उत्तर दिया कि मैं अपने माता-पिता को देखना चाहूंगा। (आपकी आंखों में आंसू जारी थे व रो-रोकर) जिनकी कृपा से मैं आज तक जिंदा हूं, जिनको लेकर मेरा वजूद है, जिनका खून मेरे अन्दर दौड़ रहा है। जिनसे मुझे अच्छा दिमाग मिला है व मैं अच्छी पढ़ाई कर सका व अच्छी पोजीशन से पास हुआ। पिता जी सुबेदार थे व वहां से छुट्टी लेकर आए, उन्होंने टेढ़ी-मेढ़ी रोटियां बनाकर हमें खिलाई व मैंने उनका मजाक उड़ाया। अब उनको अधरंग हो गया है। भगवान देवात्मा की कृपा के द्वारा उनके उपकार नज़र आते है व उनकी सेवा करके खुशी महसूस होती है। उनको 200 कि.मी. तक सरदार शहर में ले जाकर इलाज करवाया। काश! मेरे पर भगवान देवाात्मा की कृपा होती रहे व माता-पिता जी की सेवा हृदयगत भावों से करता रहूं व अपना भला कर सकूं।

वीरपाल कौर समराला मुझे बहुत अफसोस है कि मैं दो सभाएं नहीं सुन सकी। जो भी सभाएं सुनी उससे बहुत ही लाभ प्राप्त हुआ। इतनी बढ़िया सभाएं कि मानों स्वर्ग ही लग रहा था। परन्तु बार-बार यह महसूस हो रहा था कि मेरे पति जी इन सभाओं से खाली रह गए। बेशक माता जी के बिमार होने के कारण उनका न आना मजबूरी थी परन्तु फिर भी लग रहा था कि अगर मैं उनका साथ देती, किसी रिश्तेदार को घर छोड़कर व उनको साथ ले आती तो वह भी इस अमृत वर्षा से कुछ लाभ उठाते। श्रीमान जी तो हमारे रहने के लिए व हमारे भले के लिए इस तरह चिन्तित हैं परन्तु मैंने कोशिश ही नहीं की कि घर के प्रबन्ध का कोई और हल भी हो सकता है। बाकी जो भी यहां रहकर सेवा पाई है, दिल से धन्यवादी हूं। श्रीमान जी का धन्यवाद किन शब्दों से करुं जो हमारे परिवार का इतना ख्याल रखते हैं। भगवान देवात्मा की कृपा द्वारा आप तन्दरुस्त रहें व हमारे जैसे तुच्छ लोगों का भला करते रहें।

प्रिंस जी समराला मुझे इन सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। जितना संग्राम श्रीमान जी हमारे पर करते हैं, उसका रिसपोंस हम इनको नहीं दे रहे हैं। जो भी सेवा पाई है उसके लिए धन्यवादी हूं।

श्रीमती भगवान देवी जी मैंने शब्द कीर्तन व धार्मिक व्याख्यान बहुत सुने मगर ऐसा वातावरण मैंने कभी नहीं देखा। मुझे ऐसा महसूस होता है कि मेरे अन्दर का अन्धेरा दूर हो रहा है व मैं रोशनी से भर रही हूं। यहां के दृश्य देखकर हृदय धन्य-धन्य महसूस कर रहा है।

भाव प्रकाश की सभा में लोगों ने आग्रह करके भाव प्रकाश करने का अवसर प्राप्त किया। यह सभा 1.00 बजे तक चली। आखिर उसे बन्द करना पड़ा।

भाव प्रकाश की सभा में अद्भुत दृश्य पैदा हुए। कई पतियों ने अपने अत्याचार के लिए जहां पत्नियों के पावों में पगड़ी और सिर रखकर क्षमा मांगी, वहां उनको फूलमाला पहनाकर सम्मान प्रदर्शन भी किया। कुछ बच्चों ने धाएं मार-मार कर अपने पिताओं के सम्बन्ध में गलत व्यवहारों के लिए दुख से भरकर पिता के चरणों में सिर रखकर माफी मांगी। इसी तरह कुछ बेटियों ने भी स्टेज पर आकर अपने पिता से माफियां मांगी, मानो देवप्रभावों की

गंगा बह रही थी और बहुत से अधिकारी हृदय उसमें बहती अश्रुधारा के साथ अपने हृदय धो रहे थे। बहुत गहरा मार्मिक वातावरण बन रहा था। प्राय: सब के हृदय भाव-विभोर हो रहे थे और गुरु चरणों में झुक रहे थे। ऐसे ही माहौल में सभापति जी ने गुरु महाराज का, सहायकारी शक्यिों का, धर्मशाला प्रबन्ध का, सभाएं करवाने वालों का और भजन गाने वालों का, खाना खिलाने वालों का और बहुत बड़ी संख्या में आकर हाज़रीन का सभाओं में योग देने के लिए सब का धन्यवाद किया। मौसम के ठीक रहने के लिए भी खुशी का प्रकाश किया। इसके पश्चात् सब ने खड़े होकर भाव-विभोर होकर देव-आरती का गान किया। चार बार जय ध्वनि के साथ यह अति अद्भुत महा-हितकर और अति प्रभावशाली पावन पर्व सम्पन्न हो गया।

(एक सेवक)

माता – पिता और विशेष सत्संग

पाठकों की सेवा में सूचित किया जाता है कि हर साल की तरह इस साल भी कल्याण (ज़िला बठिण्डा) में माता-पिता दिवस और विशेष सत्संग 24, 25, 26 फरवरी को रखा गया है। आप सब से निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर लाभ उठायें।

धन्यवाद।

मन्त्री

सूचना : 18 दिसम्बर से 2005 माता – पिता और सन्तान के सम्बन्ध में पाठ विचार के मुबारिक दिन आरम्भ हो चुके हैं। साथी सेवकों और पाठकों से निवेदन है कि वह इन दिनों को परस्पर सम्मान सहाय, सेवा, श्रद्धा और कृतज्ञता के अमली साधनों द्वारा अधिक से अधिक सफल बनाने की कृपा करें।

– मंत्री।

Regd. Postal No.Pb (0078) 2006
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका
(2006)

1.	माता पिता और संतान के सम्बंध में	18 जनवरी बुधवार	गणेश चौथ
2.	भाई बहनों के सम्बंध में	2 फरवरी वीरवार	बसंत पंचमी
3.	देव समाज के सम्बंध में	22, 23 फरवरी बुधवार, वीरवार	
4.	पति पत्नि के सम्बंध में	14 मार्च मंगलवार	होली
5.	उद्‌भिद् जगत् के सम्बंध में	30 मार्च वीरवार	नव सम्वत्
6.	भृत्य स्वामी के सम्बंध में	14 अप्रैल शुक्रवार	
7.	वंशीय जनों के सम्बंध में	11 मई वीरवार	नृसिंह चतुर्दशी
8.	स्वदेश के सम्बंध में	7 जून बुधवार	निर्जला एकादशी
9.	साथी सेवकों के सम्बंध में	10, 11 जुलाई सोमवार, मंगलवार	व्यास पूजा
10.	स्वास्तित्व के सम्बंध में	8, 9 अगस्त मंगलवार, बुधवार	रक्षा बंधन
11.	पशु जगत के सम्बंध में	1 सितम्बर शुक्रवार	राधा अष्टमी
12.	परलोक के सम्बंध में	22 सितम्बर शुक्रवार	अन्तिम श्राद्ध
13.	स्वजाति के सम्बंध में	2 अक्तूबर सोमवार	दशहरा
14.	भौतिक जगत के सम्बंध में	21 अक्तूबर शनिवार	दीपावली
15.	मनुष्य मात्र के सम्बंध में	5 नवम्बर इतवार	गंगा स्नान
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सबंध में	3, 4, 5, 6 दिसम्बर इतवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार विशेष दिन 5 दिसम्बर मंगलवार	

नोट : 1. परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्मदिन 5 दिसम्बर 2006 ई. मंगलवार।

2. साधनों के जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए हैं, वह साधन विविध स्थानों में उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्योहार मनाया जाये।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts